॥ पौराणिक धर्म में गोमांस भक्षण ॥

तावज्जल्पन्ति मंदाधि जाड्या विजने यथा ।
न तर्जति महाशक्तिर्यावद् सत्यार्थ [illegible] ॥

प्रश्नकर्ता व लेखक—

श्री पण्डित बुद्धदेवजी उपाध्याय

आर्य्य महोपदेशक जोधपुर

प्रकाशकः—

आर्य्य समाज पाली (मारवाड़)

मूल्य -)।

वास्तविकमू०—जिन पुस्तकों के दोष प्रकट किये हैं उन पुस्तकों से एकवार इसका मुकाबला कर सत्या सत्य का निर्णय करना ।

* सू० प्रचारार्थ एकत्रित १०० प्रति लेने वालों को ४) में दिये जावेंगे ।

मुद्रक—प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस जोधपुर ।

गुरु विरजानन्द दण्डी सन्दर्भ पुस्तकालय
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कु
डा० भवानीलाल भारतीय
2496
2620

चैलेंज! चैलेंज!! चैलेंज!!

पुराणादि पौराणिक मान्य ग्रन्थों को जो गौमांस भक्षण और गौहत्या दोष से रहित सिद्ध करदे उसे एक सहस्र रुपया इनाम।

इस संगठन के युग में कालूराम अखिलानन्दादि द्वारा बहकाये हुए सनातन धर्म सभा पालीने शास्त्रार्थ का बितण्डा वाद खड़ा किया विवश हो आर्य्य समाज को भी शास्त्रार्थ स्वीकार करना पड़ा ता० १८-११-२९ को सनातन धर्म सभा के पिण्डाल में जाकर पौराणिक धर्म की अवैदिकता पर प्रश्न आरंभ किए, पुराणों में गौमांस भक्षण के प्रथम प्रश्न पर ही हाहाकार मच गया और लेखादि का बहाना कर बलपूर्वक आर्य्य पण्डितों को रोक दिया गया, प्रातःकाल द्वितीय दिवस शास्त्रार्थ करने का सनातनियों ने वचन दिया अतः उस समय लौटकर फिर प्रातः नियत समय पर शास्त्रार्थ के लिए आर्य्य पण्डितगण पहुंच गये, किन्तु रात्रि को विषय और प्रश्न उन्हें ज्ञात हो गये थे अतः दो घंटे तक बार २ ललकार ने पर भी उत्तर देने को किसी पण्डित का भी साहस न पडा, और पूर्व पक्ष निर्णय कर्त्ता आदि बातोंके वितण्डा विवाद में सारा समय नष्ट कर दिया, इस पर आर्य्य समाज ने उनको प्रश्न व शंका निवारण करने की डूंडी द्वारा घोषणा सारे नगर में करदी और निमंत्रण रजिस्ट्री पत्र द्वारा देकर आर्य्य भवन में आने

ना दी किन्तु उनमें यह कहां शक्ति थी जो शास्त्रार्थ हां "खाली चणा बाजे घणा" कहावत के अनुसार पने पिण्डाल में अखिलानन्दादिने उछल कूद गाली गलोच ने में कमी न की।

इस शास्त्राथ में मारवाड़ के प्रसिद्ध २ सनातन धर्मी पं० गण सम्मिलित हुए थे अतः सारे ही पण्डितों के माथे यह लक का टीगा लगा हुआ रह गया।

कालूराम और अखिलानन्द के अतिरिक्त श्री पं० भगवानजी तथा श्री पं० विष्णुलालजी जोधपुर, श्री पं० सहजी पीपाड आदि से सानुरोध प्रार्थना है कि सन्मुख मौखिक स्त्रार्थ न कर सकेंतो अब उन प्रश्नों के लिखित उत्तर देकर इस कलंक को धोने की कोशिश करें अन्यथा यह समझा जावेगा कि आपने इन दोषों को स्वीकार कर लिया है।

प्रकाशक—

जो मांस खाना है यह भी उन्हीं बाम मार्गी टीकाकारों की लीला है इस लिए उनको राक्षस कहना उचित है परन्तु वेदों में कहीं मांस का खाना नहीं लिखा,, भगवान् दयानन्द सत्यार्थ० ४२६

२ जो किसी को जीवन दे नहीं सकता उसको लेने का कोई अधिकार नहीं है—भगवान् बुद्ध

३ जीव दया पालो—महावीर स्वामी

३ निर्दयता से पशुओं का बलिदान रोकने के लिए नवयुवकों को चाहिए की आन्दोलन करें—महात्मा गांधी।

हिन्दुस्तान टाइम्स २५-११-२९

॥ ॐ ॥

पशून् पाहि यजु अ० १-१, गां मा हिंसीः यजु-१३-४ अविं मा हिंसी यजु १३-४४, मा हिंसीरेकशफं पशुम् य० १३-

इत्यादि मन्त्रों में गौ, घोड़ा, भेड, आदि का मारना पाप बताया गया है किन्तु पौराणिक धर्म-पुस्तकों में विपरीत मारना खाना विधि विहित बताया गया है अतः विरुद्ध होने से सर्वथा अमान्य है, यथा

क्षालनं दर्भ कूर्चेन सर्वत्र स्रोतसां पशोः ।
तूष्णीमिच्छा क्रमेणस्याद्वपार्थे प्राणदारुणि ॥१॥
सप्तावन्मूर्धन्यानि तथास्तन चतुष्टयम् ।
नाभिः श्रोणिरपानच गोस्रोतांसि चर्तुदश ॥ २॥
क्षुरोमांसावदानार्थः कृत्स्ना स्विष्टकृदावृता ।
वपामादाय जुहुयात्तत्रमंत्रं समापयेत् ॥ ३॥
हृज्जिह्वा क्रोड मस्थीनि यकृद्वृक्कौ गुदंस्तनाः ।
श्रोणीस्कंध सटा पार्श्व पश्वंगानि प्रचक्षते ॥ ४॥

भाषा—यज्ञ संबन्धी पशु के इन्द्रिय अर्थात् छिद्रों को दाभ की कूंची से अपनी इच्छानुकूल मौन होकर धोवे । १ वपा अर्थात् चर्बी के लिए वपा श्रपणी नाम का यज्ञ का बरतन जिसमें चर्बी निकाल कर रखी जाती है वह पत्तों का अथवा लकड़ी का हो, गौ के शरीर में चौदह छेद होते हैं

नेत्र कान आदि सात तो उपर होते हैं (सिरमें) र थन नाभि योनि (पेशाब की जगह) और गुदा (गोबर ने की जगह) ॥ २

मांस के टुकड़े करने के लिए छुरा होता है प्रधान याग वन) और स्वीष्टिकृत की एक साथ आहुतियां चर्बी को कर देवें और मन्त्रों को समाप्त करें ॥ ३ ॥

हृदय जीभ, गोड, हड्डी, जिगर, गुर्दे, गुदा, स्तन, श्रोणी और सटा (ठाठे) दोनों पार्श्व (पसलियां) ये पशु के कहाते हैं । ४ ॥

एका दशा नामंगानामवदानानि संख्यया ।
पार्श्वस्य वृक्क सक्थ्नोश्च द्वित्वादा हुश्चतुर्दश ॥५॥
चरितार्था श्रुतिः कार्या यस्मादप्यनुकल्पशः ।
अतो ऽष्टर्चेन होमः स्याच्छागपक्षे चरावपि ॥६॥

अर्थ—इन ११ अङ्गों के टुकड़े उपर लिखे मुताबिक नती से होते हैं और दोनों और की पांसुलियां, अंडकोश घ ये दो २ होते हैं इस से सब मिला कर पशु के चौदह स्से होते हैं (।५)

प्रत्येक कल्प में कहे मुताविक इस प्रकार यज्ञ करके वेद की आज्ञा पूरी करनी चाहिये इससे बकरा और चरु दोनों प्रकार से आठ मन्त्रों से हवन करना चाहिये । कात्यायनस्मृति

वशिस्ठस्मृति में गौमारना

पितृ देवतातिथि पूजायां पशुं हिंस्यात् ।

पितर, देवता, और अतिथि (महिमान) इन के सत्कार में हिंसा करे ।

मधुपर्केच यज्ञेच पितृ दैवत कर्मणि ।
अत्रैवच पशुं हिंस्यान्नान्यथेत्यब्रवीन्मनुः ॥

मधुपर्क (शहद आदि मिला कर जो विवाह के मौके मोके पर वर आदि को जो खिलाया जाता है) अर्थात् हवन और देवता के लिए बलि ऐसे मौकों पर ही अर्थात् जानवरों की हिंसा करे यह मनु कहते हैं ।

अथापि ब्राह्मणाय वा राजन्याय वा अभ्यागताय वा ।
महोक्षं वा महाजं वा पचेदेवंमस्यातिथ्यं कुर्न्तीति ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, अभ्यागत (पाहुना) इनके लिए बड़ा बैल या बड़ा बकरा पकावे इसी प्रकार इसका आतिथ्य (महिमानदारी) करते हैं ॥ पं० मिहिरचन्द्र सनातन धर्मी द्वारा अनुवाद भारबन्धु प्रेस अलीगढ़ छपी हुई सन १८९९ अष्टादश स्मृति अन्तरगत वशिष्ठ स्मृति अ० ४

याज्ञवल्क्य स्मृति में गो-बध ।

महोक्षं वा महाजं वा श्रोत्रियायोपकल्पयेत् । गृ० ध० प्र०

यह पाठ भी वशिष्ठ स्मृति के समान ही है जिसका अर्थ ऊपर आचुका है ॥

ब्रह्म वैवर्त पुराण और गाय की हत्या

पञ्च कोटि गवां मांसं सापूपं स्वन्नमेवच ।
एतेषाञ्चनदीराशी भुंजतेब्राह्मणामुने ॥ प्र. खं अ. ६१ श्लो० ६६

अर्थ—ब्राह्मण लोग ५ करोड गायों का मांस और मालपूवे खाते थे ॥

इसी पुराण में कृष्ण जन्म खन्ड अ० १०५ में रुक्मिणी जो कृष्ण भगवान् की धर्म पत्नी थी उसके विवाह में भोजनार्थ (कुंवर कलेवा आदि के लिए) नीचे लिखे मुताबिक तय्यारी करने को कहा:—

गवां लक्षं छेदनञ्च हरिणानां द्विलक्षकम् ।
चतुर्लक्षं शशानाञ्च कूर्माणाञ्च तथा कुरु ॥
दशलक्षं छागलानां भेटानांतच्चतुर्गुणम् ।
एतेषां पक्व मांसञ्च भोजनार्थञ्च कारय ॥

अर्थ—विवाह में भोजन के लिए गायें १ लाख दो लाख हरिण ४ लाख खरगोश ४ लाख कछुवे १० लाख बकरे १६ लाख भेड़ें कटवा कर बनवाया (पकवाया) जावे ।

विष्णु पुराण और श्राद्ध में ब्राह्मणों को गौमांस खिलाना ।

और्व बोले श्राद्ध के दिन ब्राह्मणों को हविष्य भोजन कराने से पितर लोग एक महिने तक परितृप्त रहते हैं मछली देने से दो महिने खरगोश के मांस से तीन महिने

पक्षी मांस से चार महिने, सूवर के मांस से पांच महिने बकरी के मांस से ६ महिने एणय से (काले हरिण) ७ महिने रुरु (मृग जाति वि०) ८ महिने रोज (अर्थात् जंगली गाय) से ९ महिने मेढे के मांस से १० और गौ मांस से ११ महिने तक पितर लोग परितृप्त रहते हैं।

विष्णु पुराण वंगवासी कार्यालय द्वारा मुद्रित सं० १९५६ अं० ३ अध्याय १६ पृ० ३१३ एवं ३१४

इसी पुराण की संस्कृत टीकाएँ "विष्णु चित्ती व्याख्या' तथा श्रीधरीय ये दो प्रसिद्ध हैं दोनों टीकाओं में "गव्य" शब्द पर इस प्रकार लिखा है।

"मांस प्राय पाठात्" गव्यं मांसमेवेत्यन्ये,,

मांस का सिर्फ सिक्षा होने से यहां "गव्य" शब्द से गौ मांस का ग्रहण अन्यलोग करते हैं। तात्पर्य यह है कि गो मांस से ११ महिने तक पितर लोग परितृप्त होते हैं ऐसा अर्थ करने वालों का खण्डन उन्होंने भी नहीं किया प्रत्युत दोनों प्रकार के अर्थ दिखा गये।

राज्ञो महानसे पूर्वं रन्ति देवस्य वै द्विज।
द्वे सहस्रे तुवध्येते पशूना मन्वहं तदा ॥ ८ ॥
अहन्य हनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा।
समांसं ददतोह्यन्नं रन्ति देवस्य नित्यशः ॥ ९ ॥

अद्य ता कीर्त्तिरभवन्नृपस्य द्विज सत्तम
चातुर्मास्येच पशवो वध्यन्त इति नित्यशः ॥१०॥

भाषार्थः—और हे ब्राह्मण ! पहिले राजा रन्ति देवकी रसोई में प्रतिदिन दो सहस्र पशु और दो सहस्र बैल मारकर रांधे जाते थे, और राजा रन्ति देव सदा वह मांस और अन्न अतिथियों को देता था, जिससे उसकी बड़ी कीर्त्ति होगई थी वैसेही चातुर्मास्य यज्ञ में भी सदा पशुओं का वध किया जाता है ॥ ८-१० ॥

महा भारत वनपर्व ब्राह्मण व्याध सम्वाद २०८ अध्याय
सनातन धर्म प्रेस मुरादाबाद ३०-६-१६१४

एक अन्य पुस्तक का पाठ

पहिले समय में राजा रन्तिदेव की रसोई में दो हजार पशु मारे जाते थे प्रति दिन दो हजार गौवों का मांस राजा रन्तिदेव की रसोई में पकता था उस राजा की संसार में बड़ी कीर्ति फैली थी । महाभारत वनपर्व द्विज व्याध संवाद अ० २०६ कालेज मेशीन प्रेस कलकत्ता से मुद्रित सन १६१७

And in days of yore, O Brhman, two thousand animals used to be killed every day in the kitchen of king Rantideva; and in the same manner two thousand cows were killed every day; and O

best of requirate beings. King Rantideva acquin unrivalled reputation by distributing food every day.

English Translation of Mahabarat Van Parv by Pratap Chandra Rai C. I. E. Second Edition Calcutta Bharat Press No. 1 Raja Gooru Dass street 1889.

तैष्याऊर्ध्वमष्टम्यांगौः ॥१४॥ ताऽसन्धिवेला समीपंपुरस्ता दग्नेरवस्थाप्योपस्थितायां जुहुयाद्यत्पशवः प्रध्यायतेति ॥ १५ ॥

अर्थ—पौष मास की पूर्णिमा के पीछे अष्टमी तिथि को गौ मांस द्वारा मांसाष्टका करे ॥ १४ ॥ सन्धिवेला (रात और दिन का संयोग समय) के कुछ पहिले अग्नि के पूर्व भाग में उस गौ को लाकर रक्खे, पीछे सन्धिवेला होने पर "यत् पशव प्रध्यायत" इस मन्त्र से घी की आहुति देकर कार्यारम्भ करे ॥ १५ ॥

हुत्वा चानु मन्त्रयेतानु त्वा माता मन्यतामिति ॥१६॥

अर्थ—कार्य के आरम्भ सूचक पूर्वोक्त आहुति देने पर इस समय यव मिला जल पवित्र, क्षुर, शाखा विशाखा वर्हिः इध्म, आज्य, दो समिधा, और स्रुव, ये सब भी अपने पास आवश्यक्तानुसार ठीक रखे. "अनुत्वा" इस मन्त्र को पढ़ते हुवे गौ को मारने के लिये निमन्त्रण देवें ॥ १६ ॥

यवमतीभिरद्भिः प्रोक्षेदष्टकायैत्वा जुष्टां प्रोक्षामीति ॥१७॥

अर्थ—"अष्टका देवता की प्रीति के लिये प्रीति पूर्वक सेवनीय तुम्हें धोता हूं" यह मन्त्र पढते हुवे उस वध्य गौ को यव से भींगा जल से धोवे ॥ १७ ॥

उल्मुकेन परिहरेत् परिवाजपतिः कविरिति ॥ १८ ॥

अपः पानाय दद्यात् ॥ १९ ॥

अर्थ—"परिवाजपति (ऋ० आ० १. १. १३. १०)"—इस मंत्र को पढकर एक मुट्ठी खरजलाकर, उस जलते हुवे खर से गौ की प्रदक्षिणा करे ॥ १८ ॥ उस गौ को एक पात्र में जल पीने को देवें ॥ १९ ॥

पीतशेषमधस्तात्पशोरवसिञ्च दात्तं देवेभ्योहविरिति ॥ २० ॥

अर्थ—पीने से जो पानी बचे, उसमें "आत्तं देवेभ्यो-हवि" इस मंत्र को पढ कर उस गौ के अधो भाग को सींचे ॥ २० ॥

अथैनामुदगुत्सृप्य संज्ञपयन्ति ॥ २९ ॥ प्राक्शिरसमुदक्पदीं देव देवत्ये दक्षिणा शिरसं प्रत्येक्पदीपितृ देवत्ये ॥२२,२३॥

अर्थ—अनन्तर मारने के लिये प्रस्तुत (तैयार) ऋत्विक्गण, उस गौ को अग्नि के उत्तर लाकर काट डालें ॥ २१ ॥ यदि देव कार्य निमित्त गौ मारी जावे, तो, पशु का मस्तक पूर्व दिशा में रक्खे और चारों पैर उत्तर की ओर

रक्खे और यदि पितृ कार्य के लिये गौ-वध हो, तो पशु का मस्तक दक्षिण दिशा में और उसके पैर सब पश्चिम ओर रक्खे ॥ २२,२३ ॥

संज्ञप्तायां जुहुयाद्यत्पशुर्मायुमकृतेति ॥ २४ ॥

अर्थ—उक्त गौ मारे जाने पर "यत्पशु" मन्त्र से आज्य होम करे ॥ २४ ॥

पत्नीचोदकमादाय पशोः सर्वाणि स्रोतांसि प्रक्षालयेत् ॥ २५ ॥

अर्थ—एवं उस समय यजमान की स्त्री जल से, उस कटे हुये शिर वाली गौ के नेत्र आदि इन्द्रिय अच्छे प्रकार धोवे (माथे में नेत्र आदि सात, चार स्तन, नाभि, कटि देश गुह्य देश, ये १४ स्थान हैं) ॥ २५ ॥

अग्रेण नाभि पवित्रे अन्तर्धाया नुलोममाकृत्य वपामुद्धरन्ति ॥ २६ ॥

अर्थ—नाभि के समीप पवित्र द्वय छिपाकर लोमानुसारण क्रम से क्षुर से निम्न—गामि चालन से काटकर उसमें से वपा निकाले ॥ २६ ॥

ता७ँशाखाविशाखयोः काष्ठयोरवसज्या भ्युक्ष्य श्रपयेत् ॥ २७ ॥
प्रश्चुतितायां विशसथेति ब्रूयात् ॥ २८ ॥

अर्थ—और निकाली हुई वपाको, शाखा, विशाखा नामक पलाश की लकड़ी का बना हुआ ढक्कन के आधार पर रक्ख कर, जल से सामान्य रूप से धोकर अग्नि से सिद्ध करे

॥२७॥ इधर, उसके नाभि के समीप से काट कर मेद निकाल इस गौ के चमडा निकालने की आज्ञा करे ॥ २८ ॥

यथान प्रागग्नेर्भूमिꣳ शोणितंगच्छेत् ॥ २९ ॥ शृतामभिधार्यो दगुद्वास्य प्रत्यभिधारयेत् ॥ ३० ॥ स्थालीपाकावृता व पामवदाय स्विष्टकृदा वृतावाष्टकायै स्वाहेति जुहोति ॥ ३१ ॥

अर्थ—परन्तु चमडा छुड़ाते समय ऐसा न हो कि अग्नि के आगे होकर रुधिर बह चले ॥ २९ ॥ इस वपा के तय्यार होने पर, उसमें घी का ढार देकर उसे अग्नि के उत्तर भाग में उतार कर रक्खे और पुनः उसमें घी का ढार देवे ॥ ३० ॥ अनन्तर उस आग में वपा, जो ठंडे के कारण जम जावे गी, उसे "स्थाली पाक" की रीति से, या स्विष्ट कृत की रीति से चाकू से काटकर उसमें से लेकर "अष्टकायै-स्वाहा" इस मंत्र से होम करे ॥ ३१ ॥

गोभिल गृहसूत्रम्, पं० सत्यव्रत सामश्रमीजी कृत संस्कृत टीका की भाषा टीका, क्षत्रिय कुमार उदयनारायण वर्माकृत प० ३. ख० १०. सू १४—३१

॥ नमांसोमधुपर्कः ॥ आश्वालायन सू० १-२४-२६

अर्थ—मांस के बिना मधुपर्क होई नहीं सकता और वह भी गाय बैलादि ही अतिथि के अर्थ काटे जाते थे यह उपर आचुका है ।

रामायण और अश्वमेध

कौशल्या तं हयं तत्र परिचर्य समन्ततः ॥ वाल्मीकि रामायण
कृपाणैर्विशशा सैनं त्रिभिः परमयामुदा । स-१४-३३

अर्थ—घोड़े की चारों ओर से परिक्रमा कर के ऋत्विज आदि सहित कौशल्याजी ने उस यज्ञ के घोड़े को मारा। इस कथा का विस्तृत हाल ऊपर लिखे ठिकाने पर देखें जहां मारने, काटने चर्बी निकालने और उससे हवन करने आदि का पूरा हाल है।

तां तदा दर्शयित्वा तु मैथलीं गिरि निम्नगाम् ।
निषसाद गिरी प्रस्थे सीतां मांसेन छंदयन् ॥ १ ॥
इदं मेध्य मिदं स्वादु निष्टप्त मिद मग्निना ।
एवमास्ते स धर्मात्मा सीतया सह राघवः ॥ २ ॥

अर्थ—उस समय श्रीरामचंद्रजी जनक कुमारी सीताजी को पहाड़ी नदी मंदाकिनी के दर्शन करा कर चटान पर बैठ गये वह मन्त्रों से पवित्र मांस सिताजी को दिखाय कहने लगे ;

हे जानकी ? यह मांस अति पवित्र है और स्वाद युक्त है और अग्नि में भली भांति पकाया गया है धर्मात्मा रामचंद्रजी सीताजी को यह कहते हुए चित्र कुट पर्वत की चटान पर बैठ गये।

पं० ज्वाला प्रसाद की टीका देखो, अयोध्या काण्ड स० ६६-१-२

स्वादु—और स्वाद युक्त शब्दों को ध्यान पूर्वक देखें।

क्रोश मात्रं ततो गत्वा भ्रातरौ राम लक्ष्मणौ। अयो०
बहून्मेध्या न्मृगा न्हत्वा चेरतुर्यमुना वने॥ स० ५५-३२

अर्थ—राम तथा लक्ष्मण ने कोस भर आगे जाकर बहुत से यज्ञ (हवन) के लिए हिरण मारे और जमना के जंगल में खाये, (चर धातु का फिरना और खाना दोनों अर्थ हैं)

स लक्ष्मणः कृष्ण मृग हत्वा मेध्यं प्रतापवान्।
अथ चिक्षेप सौमित्रिः समिद्धे जात वेदसि॥ २६॥
तत्तु पक्वं समाज्ञाय निष्टप्तं छिन्न शोणितम्।
लक्ष्मणः पुरुषव्याघ्रमथ राघवमब्रवीत्॥ २७॥
अयो० का० स ५६

अर्थ—प्रतापी लक्ष्मण ने काले मृग (हरिण को) मारकर जलती हुई तेज आगमें उसको डाल दिया और खून निकलना जब बंद हो गया, भलि भांति पका हुवा जान कर श्रीरामजी को सूचना दी। सू० उपरोक्त ठिकाने पर हवन और मांस द्वारा पूजन का पूरा हाल देखिए।

भरद्वाज के आश्रम में मांस का भोजन और शराब पीना

सुरां सुरापाः पिबत पायसंच बुभुक्षिताः ।
मांसानि च सुमेध्यानि भक्ष्यतां यो यदिच्छति ॥५२ ।

अयो० स० ९१

अर्थ— शराब के पीने वाले शराब पीवें क्षीरादि खाने वाले खीर और पवित्र मांस के खाने वाले मांस खावें इच्छा मुताबिक भोजन तय्यार है ।

यह सब कुछ भरत की सेना के लिए भरद्वाज मुनि ने पकवाया था ऊपर लिखे पते पर देखिए वहां पूरा हाल मिलेगा ।

शुद्ध बाण हतां स्तत्र इत्यादि श्लोक ३४ से ३८ में काले मृगों का मारना अग्नि में भूनना बलि कर्म कर राम और लक्ष्मण को मांस खिला कर जान की जी का मांस खाना, और शेष बचे हुए मांस को सुखाने रखकर जानकी जी का कौवे उड़ाने पर बैठना इत्यादि, इसका पूर्ण विस्तार युक्त लेख देखो बा० रामायण पं० ज्वालाप्रसाद जी सनातन धर्म के महोपदेशक कृत भाषाटीका पृ-४३२

कोई कोई अब इसको प्रक्षिप्त मानने और लिखने लगे हैं, चलो कुछ सुबुद्धितो ईश्वर ने दी ।

नोट—सारे सनातन धर्मी जब तक इसको प्रक्षिप्त न मानें और पुस्तकों में से दूर न करें तब तक इस कलंक से छुटकारा नहीं हो सकता ।

जबरन मांस खिलाने की धींगा धींगी और नर्क का भय।

नियुक्तस्तु यदा श्राद्धे दैवे वा मांसमुत्सृजेत्।
यावंति पशुरोमाणि तावन्नरक मृच्छति ॥ ३१ ॥
वशिष्ट स्मृति–११-३१

अर्थ—श्राद्ध व देवता के निमित्त नोता देने पर जो मांस को न खावे तो उस मारे हुए पशु के जितने बाल हैं उतने नर्क में जाता है।

जबरन मांस खिलाने का दूसरा श्लोक

नियुक्तस्तु यथा न्यायं यो मांसं नात्ति मानवः।
स प्रेत्य पशुतां याति जन्म नामेक विंशतिम् ॥ मनु ५-३५

अर्थ—शास्त्र नियुक्त मांस को जो नहीं खाता वह मर कर २१ जन्म तक पशु बनता है।

इन दोनों श्लोकों के आधार से यह सिद्ध है कि श्राद्ध, देव पूजन, यज्ञादि में (जो पीछे आया है) गाय, घोडा, बकरे आदि का मांस खाना आवश्यक बताया गया है

वास्तव में न तो ऋषियों की आज्ञायें ही हैं न उन लोगों ने कभी खाया। किन्तु स्वार्थी मांसाहारियों ने ही ये वचन ऋषि मुनियों के नाम से घडे हैं, इन्हीं दुष्ट ग्रन्थों के कारण आज हमारा इतिहास खराब किया जारहा है और धर्म परायण

पवित्र आर्य्यों पर यह लाञ्छन लग रहा है सत्य प्रियता तो यह थी कि ऐसे जाल ग्रन्थों का परित्याग होता किन्तु दुःख है कि इस विद्या के प्रकाश युग में भी इन पुस्तकों को लीपा पोती से निर्दोष सिद्ध करने का घृणित पाप कर रहे हैं।

चोरी, और सीना जोरी

कालूराम अमरोधा वासी ने "मांसविचार" नामक ट्रैक्ट में इन पुराणादि जाल ग्रन्थों की हिमायत करते हुए इस प्रकार पाप को छिपाने की कोशिस की है यथा "जहां पर अन्न प्राप्त नहीं होता औरलोग मांस खाते हैं उन देश वासियों के लिए श्राद्ध आदि में मांस का विधान है वर्तमान काल में "निकोबार" आदि देशों में अन्न उत्पन्न नहीं होता ऐसे लोग क्या श्राद्ध करना छोडदें"

॥ पाप छिपाये न छिपा ॥

इस वज्र मूर्खता के लेख पर इन को लज्जा आनी चाहिये, रही सही कलई और खुल गई निम्न लिखित हेतुओं से इनका पाखण्ड भरा उत्तर छिन्न भिन्न हो जाता है।

(१) संसार में ऐसा कोई खण्ड या प्रान्त हुवा न है जिसमें गाय, घोड़े, बकरियां, भेड़ें, आदि हों और अन्न उत्पन्न न हो

(२) भारत वर्ष से इतर (दूसरे) प्रान्तों एवं प्रदेशों को

आप अनार्य (म्लेच्छ) देश मानते हैं और वैदिक कर्म काण्ड से वर्जित बताते हैं।

(३) जहां श्राद्ध में मांस खाना आया है वह ब्राह्मणों के लिए आया है और ब्राह्मण भारत से भिन्न देश में आप नहीं बताते और मानते हैं।

(४) आपके पुराणादि ने हविष्य भोजन (अन्नादि) से एक मास पितरों की तृप्ति बताई है और गौ मांस, से ११ महिने तक जिससे स्पष्ट सिद्ध है कि अन्न होते हुए श्राद्धादि कर्मों में मांस, गौ मांस को श्रेष्ठता दी गई है यथा, तिलैर्व्रीहियवैर्माषैरद्भिर्मूल फलेन वा।
दत्तेन मासं तृप्यन्ति विधिवत्पितरो नृणाम्॥मनुअ ३-२६७
अर्थ—तिल, चावल, जौ, उड़द, पानी, कंद, फल आदि से किया हुवा श्राद्ध एक महिने भरहीं पितरोंको तृप्त करता है।

(५) राजा रंतीदेव की रसोई में अन्न के साथ गौ मांस पकाना अयोध्या में घोड़ा मारकर कौशल्या का अश्वमेध करना रामचंद्रजी का फल मूल होते हुए जमना के किनारे हिरणों का मारना, भरद्वाज के आश्रम में नाना प्रकार के भोजनों के साथ मांस और शराब का होना, रुक्मिणी के विवाह में गाय आदि पशु भोजनार्थ बुलवाना, इत्यादि घटनाऐं "टंडा" निकोबार आदि की नहीं किन्तु भारतकी हैं जहां अन्नके साथ २ मांस पकाया और खाया गया है।

(६) यज्ञादि कर्म में वेद मन्त्रों को बोलते हुए मांस की आहुतियों का संबन्ध वेद पाठियों से है न कि टंडा आदि टापुओं से क्यों कि उनके लिए वेद पाठ का अधिकार ही आपके मत में नहीं है।

(७) कात्यायन स्मृति खण्ड २६ में अन्वष्टका कर्म (हवन) के लिए, दुग्ध, पायस, अन्नादि की आहुतियां, पशु न मिलने पर बताई हैं जिससे सिद्ध है कि अन्न दुग्ध, क्षीर आदि होते हुए भी गाय आदि पशुओं के मांस का हवन श्रेष्ठ बताया गया है।

मांसाहारियों का एक और वितण्डावाद

अग्निहोत्रं गवालंभं सन्यासं पलपैतृकम्।
देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौपञ्चविवर्जयेत् ॥

अर्थ—अग्निहोत्र, गौका यज्ञ में मारना, सन्यास, और मांस के पिण्ड, देवर से सन्तान पैदा करना—ये कलियुग में वर्जित हैं ॥

धन्य है तुम्हारे माया जाल को चित्त भी हमारी पुट भी हमारी" यह तुम्हारी शतरंज की चाल आखिर कब तक चलेगी नीचे लिखे कारणों से यह बादीगर का स्वाङ्ग खुल जाता है।

(१) पुराणों की रचना व उपदेश कलिकाल के लिए ही विशेष रीति से आप लोग बताते हैं और श्राद्ध आदि में मांस

का विधान उनमें है अतः कलि वर्जित धर्म नहीं ठहरता।

(२) गोभिलगृह्यसूत्र आदि प्रतिपादित विधि कलिवर्जित है तो विवाह उपनयनादि संस्कार उस विधि के आधार पर क्यों किए जाते हैं

(३) यदि सन्यास का लेना कलियुग में निषिद्ध है तो श्रीशंकराचार्यजी, श्रीरामानुजाचार्य, आदि मुण्डी और यतियों कोक्या विधि विरुद्ध आचारण करने वाला कहोगे।

(४) शंकराचार्य के मठ और उनकी संप्रदाय के आचार्यों को जो सन्यासी हैं क्या विधि विपरीत कर्म वाले मानते हो

(५) कलियुग में मांस से देवता पूजन निषिद्ध है तो काली, दुर्गा, भैरव, आदि के सहस्रों मंदिरों में और नव रात्रियों के अवसर पर बलिकर्म क्यों होता है यदि कहो कि गवालंभ मात्र का निषेध है बकरे आदि का नहीं तो यह भी कथन कपोल कल्पित है जहां गायों का विधान है वहां पर ही बकरे आदि का वध है अतः आधा भाग त्याज्य और आधा उपादेय "अर्द्धजरित" न्यायानुसार नहीं हो सकता।

। सारा भांडा फूटगया ।

मध्य भारत अन्तरगत "सुठालिया एक रियासत है" वहां के अधीशने दुर्गा पूजनादि पर बकरे न मारने के सम्बन्ध में स्वर्ग वासी पं० भीमसेनजी से शास्त्र व्यवस्था मांगी थी। इस पर उक्त पंडितजी ने काशी के शिरोमणि पं० श्री महा-महोपाध्याय (जो सनातन धर्म में सब से उच्च पं० थे) महोदय

को पत्र लिख संमति मांगी और उस पर क्या उत्तर मिला ध्यान से पढ़ें ।

श्रीरामचन्द्रायनमः ।

स्वस्ति श्रीयुत पण्डित भीमसेन शर्मणे शुभमाशीः

तामसपूजापेक्षया सात्विकपूजा देवताया अधिक सन्तोषाय पूजयितुश्चाधिक कल्याणाय भवतीति ममापि सम्मतम् । परं मूल्य द्रव्ये न्यूनता न करणीया वासनावैचित्र्येण तामसप्रवृत्तावेव विश्वास भाजान्तु सात्त्विके दृढश्रद्धा सम्पादनं विना प्रवृत्ति परिवर्त्तनं नकार्य्यम् । इति शिवम्

अनुवाद—तामस पूजा की निस्वत सात्त्विक पूजन देवताओं के संतोष और पूजन करने वाले का अधिक कल्याणदायक है इस में मेरी भी संमति है । किन्तु पूजा के असली सामान में कमी भी न करनी चाहिए, मानसिक भावों के भिन्न २ होने से तामस कर्म में विश्वास और श्रद्धा रखने वालों की सात्त्विक कर्म काण्ड में श्रद्धा की दृढता न हो तब तक उस तामस कर्म (पशु बलिदानादि) से हटाना भी नहीं चाहिये । देखो गो० गृह्यसूत्र भाषा भाष्य उदयनारायणसिंह कृत भूमिका पृ० ३५ इस पत्र से सारा भांडा फूट जाता है न तो निकोबार का न सतयुगादि का कोई बहाना मिलता है प्रत्युत मद्यमांस में प्रवृत्ति और श्रद्धा रखने वालों के लिए इस समय भी बलि-कर्म जाइज मानते हैं ।

सावधान सावधान सावधान

मनुष्यता से गिरा हुवा राक्षसी कर्म अब भी करते हैं

निकोवार और कलिकाल वर्जित का बहाना गलत है

इन रोमांचकारी महाघृणित निंदनीय कर्मोंका ताजा उदाहरण।

हिन्दुस्तान टाइम्स का ताजा लेख २५-११-२९

In the current issue of Young India, Mahatma Gandhi draws attention to the urgent Necessity of putting a stop to the inhuman practice of sacrificing animals to the propitiable powers above. The practice, it sums, has attained sudden popularity in the Dharwar district of the Bombay Presidency. Last year four goats were sacrificed in Dharwaratayajna performed by Brahmins. This year the number went up to twenty four. The method of killing the animals was also outrageous as it consisted of tightening their mouths and their pounding this by fists until they were dead "If what is stated is at all true" writes Mahatma Gandhi, "it betrays a shocking state of things and an undoubted reversion to barbarious scene. It is a matter for deep sorrow and humiliation that there should be educated men enough in the country who believes that there are gods who can be appeased or conciliated by the sacrifice of animals". The Mahatma recommends that Youth Leagues all over the country should rise in revolt against these sacrifices, educate public opinion so as to make them impossible. The subject seems to be also a suitable one for legislative interference. Hindustan Times 25/11/29.

गुरु विरजानन्द द० (... पुस्तकालय) पत्रिग्रहण क्रमांक 2818

भाषार्थ—अभी हाल के [illegible] महात्मा गांधी, जीवों के बलि कर्मके प्रति जो मनुष्य सभ्यता के विपरीत है अत्यन्त आवश्यक समझ ध्यान दिलाते हैं यह रिवाज मुम्बई प्रांतान्तर धारवाड में कुछ विशेष स्थान पागया है. पिछली साल एक यज्ञ में जो ब्राह्मणों ने किया था ४ बकरे बलि दिये गयेथे. इस साल संख्या २५ तक पहुच गई है. मारनेका ढंग अतिनिन्दनीय और अति निर्दयता पूर्ण है मुंह बांध देते हैं और घूंसोंया मुक्कों से मार २ प्राणों का अंत करते हैं. महात्माजी लिखते हैं यदि यह जो कुछ लिखा है सच है तो यह बहुत ही दिल दुखाने वाला और सचमुच जंगली पशुओंका सा कर्म है यह बड़े शोक की बात है कि देशके शिक्षित लोग जिनको ऐसा विश्वास है कि जीवों के बलि से देवता खुश होते हैं ध्यान दें. महात्माजी राय देते हैं कि नवयुवकों को चाहिये कि ऐसे बलिकर्म के रोकने के लिये आन्दोलन करें और पबलिकके ध्यानको इस निन्दनीय कार्य से बिल्कुल रोकने के लिये समझावें. विषय राज्य के हस्तक्षेप के योग्य मालूम होता है.

इनका उत्तर तीन काल में भी इनके पास नहीं है वास्तव में इन पापों को छोड देना ही इसका उत्तर है ।

सूचना—पुराणोंमें व्यभिचार की पराकाष्ठा नामक ट्रैक्ट शीघ्र प्रकाशित होगा उसे अवश्य पढ़ें । इति

ता० १३-१२-१९२९